आर एल ए समाचार

आपकी आवाज़ आप तक

रामलाल आनंद महाविधालय | सत्र 2014 -15 | पृष्ठ-4

पत्रकार अपनी काबिलियत से सफल होते हैं : अभिषेक

रामलाल आनंद कॉलेज के हिंदी, पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम के प्रथम बैच के विद्यार्थी रहे अभिषेक पाराशर 'इकानॉमिक टाइम्स' में उपसंपादक हैं। विभाग के एक सेमिनार में हिस्सा लेने के लिए वह पांच फरवरी को कॉलेज आए। इस मौके पर बीजेएमसी के हमारे साथी अनुराग आनंद, पूजा शुक्ला व नेहा कौशिक ने अभिषेक पाराशर से पत्रकारिता से जुड़े अनेक बिन्दुओं पर बात की। 'आरएलए समाचार' के लिए पेश हैं बातचीत के प्रमुख अंश :

प्रश्न : अभिषेक जी आपका रामलाल आनंद कॉलेज (आरएलए) में एक बार फिर स्वागत है। सबसे पहले आप यह बताइए कि पत्रकारिता की पढ़ाई के लिए आपने आरएलए को क्यों चुना था?

उत्तर : 2006 में जब मैं दिल्ली आया था तो मुझे इस शहर के बारे में कुछ खास मालूम नहीं था। मेडिकल में हो चुके एडमिशन को कैंसिल कराकर मैंने पत्रकारिता को चुना। हालांकि इसकी पहले से योजना नहीं थी न ही मैं यह सोचकर आया था कि मुझे पत्रकारिता करके समाज सेवा करनी है बल्कि मैं लोगों के विचारों को प्रभावित करने के विचार से मीडिया से जुड़ा। आरएलए में उसी साल पत्रकारिता का पाठ्यक्रम शुरू हुआ था सो मैंने यहां दाखिला ले लिया। इसका भरपूर फायदा मुझे मिला। अब पीछे मुड़कर देखता हूं तो लगता है कि आरएलए आने का मेरा फैसला एकदम सही था।

प्रश्न : आपके बीजेएमसी के तीन साल का सफर कैसा रहा?

उत्तर : मेरा तीन साल का सफर काफी उतार-चढ़ाव वाला रहा। बीजेएमसी का पहला साल मेरा अच्छा रहा। इस दौरान मैंने हर समारोह (संगोष्ठी व सेमिनार आदि) में सक्रिय होकर भाग लिया। अंतिम दो साल में पढ़ाई के साथ-साथ अपने हक के लिए आंदोलन भी चलाए। पत्रकारिता विभाग के संसाधनों के लिए पहले कॉलेज फिर विश्वविद्यालय स्तर पर चलाए गए आंदोलन में सहभागिता की। धरना-प्रदर्शन किया। यह ज्यादा प्रैक्टिकल रोल था, जहां हम अपनी बातें सीधे तरीके से रखते हैं वहीं हम अपने हक के लिए आवाज उठा सकते हैं।

प्रश्न : अपने हक की मांग करते हुए उन तीन वर्षों में आप कहां तक सफल हुए?

उत्तर : मैं बिल्कुल सफल रहा। इन वर्षों के दौरान मैंने जो मांगें रखी थीं उनमें से कई मांगें मान ली गईं जबकि कई मांगों को नहीं माना गया। इसके अलावा उसी दौरान मुझे अनेक अच्छे साथी मिले। अच्छे शिक्षक मिले। जैसे-सरोज मैडम, अर्चना मैडम, शंभूनाथ सर, अमित सर इत्यादि। एक पत्रकार की तरह मुझे जो करना था मैंने किया। जैसे शिक्षक चाहिए थे मुझे मिले, जो आज भी सलाह देते हैं। वहीं साथियों के साथ बातचीत का सिलसिला जारी रहता है।

अभिशेक पाराशर

प्रश्न : पत्रकारिता की पढ़ाई करते हुए विद्यार्थियों को किस तरह की किताबें पढ़नी चाहिए?

उत्तर : पत्रकारिता के विद्यार्थियों को भी पाठ्यक्रम के अनुसार नैतिक और मूल्यपरक आधारित शिक्षा दी जाती है। इसका बाद में ज्यादा उपयोग नहीं होता, लेकिन आपको यह सब पढ़ना होता है चूंकि यह आपका पेपर है और डिग्री प्राइमरी है। पत्रकारों के लिए अंग्रेजी में एक कहावत है कि 'जर्नलिस्ट मस्ट बी मास्टर ऑफ जन, एण्ड जैक ऑफ ऑल।' यानि एक पत्रकार से यह उम्मीद नहीं की जाती है कि वह किसी विषय का मास्टर हो, लेकिन इतना अवश्य होना चाहिए कि हर विषय के बारे में वह कुछ न कुछ जानता हो। उसकी आर्थिक क्षेत्र की जानकारी एक अर्थशास्त्री की तरह नहीं न राजनीतिक जानकारी राजनीतिशास्त्री की तरह होने की उम्मीद की जाती है बल्कि इतना जरूर जानना चाहिए कि वह विषयों की व्याख्या कर सके। यदि एक पत्रकार को वामपंथी आंदोलन या नक्सल आंदोलन का इतिहास पता होगा तभी वह उस विषय पर अपनी राय दे सकेगा। इसके लिए उसे इतिहास, राजनीतिशास्त्र व अर्थशास्त्र की पुस्तकों का अध्ययन करना होगा। इसके अलावा बहस, संगोष्ठी व सेमिनार में ज्यादा से ज्यादा भागीदारी करनी चाहिए। तत्कालीन घटनाक्रम से भी अवगत होते रहना चाहिए।

प्रश्न : मुख्यधारा की पत्रकारिता में जगह बनाने के लिए आपको किन-किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

उत्तर : पत्रकारिता की शिक्षा ग्रहण करने वाले हर विद्यार्थी को इन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वैसे हर किसी की जिंदगी में चुनौतियां आती हैं। इस क्षेत्र में पहले से जमे लोगों के बीच जगह बनानी होती है। हम अपनी सूझ-बूझ व का. विलियत से इसमें सफल होते हैं। सबसे अहम बात यह कि आप चीजों को कितने अच्छे से देखते हैं। यदि आप रिपोर्टिंग करते हैं तो कितने अच्छे से करते हैं यदि डेस्क पर हैं तो आपकी विषयों पर पकड़ कितनी है, ये ज्यादा मायने रखता है। खबरों में आप कितनी अच्छी हेडलाइन लगाते हैं। हालांकि यह काफी अन. आर्गनाइज्ड सेक्टर है परंतु आपकी काबिलियत पर सब कुछ निर्भर करता है।

प्रश्न : 'मेक इन इंडिया' योजना पर आपकी क्या राय है?

उत्तर : 'मेक इन इंडिया' का उद्देश्य भारत को मैन्युफैक्चरिंग हब बनाना है। उसकी योजना है कि हमारा कच्चा माल बाहर न जाए बल्कि उसका वैल्यू एडिशन देश में हो। जैसे टमाटर को कैचअप में बदला जाना वैल्यू एडिशन है। लौह अयस्क को लोहे में बदला जाए। पच्चीस फीसदी मैन्युफैक्चरिंग की जीडीपी में भागीदारी है जबकि इससे अनऑर्गनाइज्ड व ऑर्गनाइज्ड सेक्टर के लोगों को फायदा होगा है। इस योजना का स्वागत होना चाहिए। हालांकि यह कितना सफल होगा यह आने वाला समय बताएगा।

ज्ञानोदय एक्सप्रेस से मिला ज्ञान

रितु श्रीवास्तव

दिल्ली विश्वविद्यालय से एक हजार विद्यार्थियों के साथ रवाना होने वाली ट्रेन का नाम ज्ञानोदय एक्सप्रेस है। वह अपनी ज्ञान यात्रा पूरी करके वापस आ चुकी है। एक साल में दो बार जाने वाली ट्रेन में विवि के करीब एक हजार विद्यार्थी अपने अपने प्रोजेक्ट पर अध्ययन करने जाते हैं, जिसमें उनकी सहायता दिल्ली विवि की टीम करती है। बाद में अंतरध्वनि समारोह में उम्दा प्रोजेक्ट को अवार्ड दिया जाता है।

इस बार ज्ञानोदय एक्सप्रेस के जरिए विद्यार्थियों ने उत्तर पूर्वी राज्यों को निहारा। इस यात्रा में विद्यार्थियों को कई प्रकार के अनुभव होते हैं। मसलन इस बार ज्ञानोदय से कुछ समय पहले लैंग्वेज कोर्स शुरू किए गए थे, जिससे ज्ञानोदय में जाने वाले विद्यार्थी पहले से ही वहां की भाषा भलीभांति जान लें ताकि उन्हें किसी से बात करने में दिक्कत न आए।

इसी तरह कई अन्य प्रकार के अनुभव उन्हें होते हैं तभी शायद इनका मोटो है-स्टडी ऑन व्हील्स। इस प्रकार विवि के करीब 70 कॉलेज से अनेक विद्यार्थियों को चुना जाता है। उन्हें मौका मिलता है इन व्हील पर सैर करने का। इसमें आपका जितना मनोरंजन होता है उतना ही ध्यान आप अपने प्रोजेक्ट पर देते हैं। यूं कहें तो शिक्षा के साथ मनोरंजन। इस बार उत्तरी पूर्वी का दौरा काफी रोमांचकारी रहा। यह दौरा करीब 12 दिन का था। सफर की शुरुआत 18 फरवरी को सफदरजंग स्टेशन से हुई थी, जिसे हरी झंडी दिखाने के लिए उत्तरी पूर्वी के मिनिस्टर किरण रिजजू आए थे। उनके साथ विवि के कुलपति डॉ. दिनेश शर्मा भी उपस्थित थे।

ज्ञानोदय एक्सप्रेस को अच्छे से सजाया गया था। हर प्रकार की जरूरतों का ध्यान रखा गया था। प्रेजेंटेशन रूम के साथ पुस्तकालय भी था, जिसमें सेंट्रल लाइब्रेरी ने अपना पूरा सहयोग दिया। इस सफर का अंत 29 दिसम्बर की शाम सात बजे हुआ। उम्मीद है इसी प्रकार ज्ञानोदय एक्सप्रेस विभिन्न राज्यों के दौरे पर जाती रहेगी।

रामलाल आनंद कॉलेज के हिंदी,पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के मीडिया मंत्रिमंडल के चुने गए पदाधिकारी प्राचार्य डॉ. विजय कुमार शर्मा, विभागाध्यक्ष डॉ. सरोज गुप्ता व इकानॉमिक टाइम्स के उपसंपादक अभिषेक पाराशर के साथ।

फोटो : हेमन्त कुमार मिश्र

अन्दर के पृष्ठों पर

- विचार : धर्म का राजनीतिकरण...पृष्ठ 2
- मेरी उत्सुकता और बनारस की यात्रा...पृष्ठ 2
- एक प्रशंसनीय पहल : बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ...पृष्ठ 3
- हिंदी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की गतिविधियां...पृष्ठ 3
- अधिकारों से क्यों वंचित हैं 'छेदू' और 'गुड़िया'...पृष्ठ 3
- दिल्ली के रखवाले ही नहीं हैं महफूज...पृष्ठ 4
- स्वच्छ भारत मिशन को सहयोग की जरूरत...पृष्ठ 4
- क्रिकेट विश्वकप में 14 टीमों के बीच होगी जंग...पृष्ठ 4

दिल्ली में इस बार...आखिर किसकी सरकार?

शिवानी

सात फरवरी को दिल्ली में विधानसभा चुनाव के लिए वोट डाले गए। इस बीच देखना दिलचस्प होगा कि कौन सी पार्टी राजधानी में अपना वर्चस्व स्थापित करने में कामयाब होगी। मुख्य रूप से देखा जाए तो इस बार जिन दो पार्टियों के मध्य सिंहासनी जंग होगी, वे हैं- आम आदमी पार्टी और भाजपा। अगर बात आम आदमी पार्टी के संचालक अरविन्द केजरीवाल की की जाए तो देखा जा सकता है कि केजरीवाल दिल्ली की जनता में खासे लोकप्रिय हैं।

पिछली बार अरविन्द केजरीवाल के 49 दिनों के शासन में जो काम करवाए गए वे सच में काबिलेतारीफ हैं, पर केवल 49 दिनों के शासन के बाद उनके द्वारा पद छोड़ने से दिल्ली वालों का केजरीवाल के प्रति जो गुस्सा, आक्रोश, निराशा और मिले जुले भाव एक साथ उमड़ रहे थे, उन्हें भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उनके इस कृत्य से उनकी छवि जनता में एक भगोड़े के रूप में भी आई। केजरीवाल द्वारा समाज में अपनी छवि सुधारने के लिए कई बार जनता से अपने इस कार्य के लिए माफी भी मांगी गई। अब जनता क्या केजरीवाल को दूसरा मौका देगी? इस सवाल का जवाब तो 10 फरवरी को नतीजे वाले दिन ही पता चलेगा।

अब बात करते हैं भाजपा की ओर से मुख्यमंत्री पद की प्रत्याशी किरण बेदी की, जो कि भारत की पहली आइपीएस अधिकारी रह चुकी हैं। किरण बेदी की छवि जनता में एक समाज सेविका के रूप में उभरी है। बेदी पहले आम आदमी पार्टी से जुड़ी थीं पर अचानक उसे छोड़कर भाजपा का दामन थाम लिया। इस पर बेदी का कहना है कि वे प्रधानमंत्री मोदी से प्रेरित होकर भाजपा में आई हैं। इसी तरह एक तीसरी पार्टी कांग्रेस भी मैदान में है। इस चुनाव में कांग्रेस का नेतृत्व अजय माकन कर रहे हैं, लेकिन वह कुछ खास प्रभाव नहीं छोड़ पा रहे हैं। कुल मिलाकर दिल्ली की जनता 10 फरवरी का इंतजार कर रही। आखिरी फैसला तो जनता का ही होगा।

परामर्शदात्री की कलम से

प्रिय मित्रों,

काल चक्र के नियमानुसार परिवर्तन और प्रवर्तन जीवन का गहरा सत्य है। शाश्वत कुछ भी नहीं। जल का वाष्पीकरण, बादल, सावन, वर्षा, नदी, सागर और पुनः वाष्पीकरण की यात्रा यही परिवर्तित रूप का सत्य है–कालचक्र का सत्य है। समुद्र–मंथन जैसे अलौकिक–अनुष्ठान को यदि सन्दर्भगत सत्य से आंके तो उसके तत्कालीन परिवेश के प्रवर्तित–स्वरूप का अनुपम सत्य दिखाई देगा। देव–असुर के इस संघर्ष में क्या ईश्वर के प्रिय मनुष्य के लिये संचरित–सत्य विद्यमान है? यदि है तो कैसा? उसी पर दृष्टिपात करते हैं–मंथन प्रथम प्राप्ति विष की। विष ने शिव (कल्याण) द्वारा संकेत दिया कि विष अर्थात् दुःख न तो हृदय का विषय है न ही मस्तिष्क का विषय है कंठ का। यदि हृदय में दुःख को स्थान दिया गया तो हृदय अस्थिर भाव में रहेगा और अस्थिरता कल्याणकारी नहीं हो सकती। मन और मस्तिष्क को यदि हाइपरटेंशन से बचाना है तो आवश्यक है दुःख कष्ट का विषय रहे। कामधेनु का अधिकार ऋषियों को प्रदान किया गया, आज जहां बाजारवाद में भौतिक सुखों की लालसा ने मनुष्य को उपभोक्ता बना दिया है वहां अनिवार्य है इच्छाओं पर अंकुश लगाना, जिससे सन्तोष धन प्राप्त हो और मनुष्य रूप मे ऋषि–मुनि वे श्रेष्ठ पुरुष हैं जिन्होंने अपनी आध्यात्मिक विकास यात्रा में इच्छाओं पर अंकुश लगाया। उच्चेश्वर्य की गतिमयता और तीव्रता आज की संचार–क्रांति का प्रतीक है। इस संचार क्रांति ने विश्व–ग्राम की स्थिति पैदा कर दी है। इस गति की तीव्रता के सौंदर्य को वसुधैव कुटुंबकम की अनुभूति से सराबोर करना ही उच्चेश्वर्य की सार्थकता है।

ऐरावत ऐश्वर्य और वैभव का प्रतीक जिसकी तुलना ऑडी और बी.एम. डब्ल्यू से की जा सकती है। ये ऐरावत उस अनुत्तरित प्रश्न का हल जानने का प्रतीक है जहां आज मानव आत्म–अमरत्व के स्थान पर पूंजी–अमरत्व के लिए प्रयासरत है। कौस्तुभ मणि को नारायण हृदय के पास संजोया आज के विषाक्त वातावरण मे जहां ओबामा अपना आक्सीजन सिलेंडर साथ लाता है वहां नर से नारायण बनने की यात्रा में स्वस्थ शरीर के महत्त्व को कौन नकार सकता है? अतः औषधि की पहचान और उसका सदुपयोग मानव द्वारा किया जाए। पारिजात को समुद्र तट पर स्थापित करना अर्थात् पंच तत्व के मेल और सन्तुलन से पर्यावरण का सौंदर्य। पंच तत्व एक दूसरे के पूरक हैं। जीव, पेड़, पौधे, जल, वायु सभी की अनिवार्यता–आवश्यकता मनुष्य जीवन में है। रम्भा फ्रायड के सिद्धान्त का प्रतीक है तो लक्ष्मी कर्मयोगी का सौंदर्य, जो अपनी चंचलता विवेकशील के सम्मुख छोड़ देती है। अतः लक्ष्मी भाग्य का नहीं कर्म का प्रतीक है। वारुणी और सुरा असुरों को देने का अर्थ की युवा पीढी को नकारात्मक पहलुओं से सजग रहने की घोषणा।

असुर कोई और नहीं हमारी नकारात्मक सोच है जहां डिप्रेशन जैसी स्थिति पैदा होती है। अंत में धन्वन्तरि हरीतिका और अमृत कलश लेकर अवतरित हुए जहां ये सन्देश दिया कि जिस प्रकार हरीतिका त्याज्य पदार्थ को पेट में नहीं रखती और भोग्य पदार्थ को अमृत तुल्य बना देती है, उसी प्रकार जो मनुष्य संसार में त्याज्य विचारों और भावों को हृदय में नहीं रखता और भोग्य सुन्दर विचारों और भावनाओं का हृदय से स्वागत करता है वह अमरत्व को प्राप्त करता है। समुद्र–मन्थन का प्रतीकार्थ यही है कि मनुष्य आत्म–मंथन के कर्मविपाक बन राष्ट्र में सकारात्मक भूमिका निभाते हुए अमरत्व प्राप्त करें।

आज फिर आर.एल.ए. समाचार–पत्र आप सभी के सम्मुख अपने परिवर्तित संघर्षमयी सत्य के साथ।

नारी

आखिर क्या है नारी?
एक आहुति
जो चढ़ती है जमाने में
या एक मशीन जो आती है काम
पुरुषों के
आखिर क्या है नारी?
सींचती है पौधा आंसुओं से
घबराती है जो जमाने से
या है कोई दुष्ट आत्मा
जिसे हम मार देते हैं
गर्भ में या जन्म के बाद
आखिर क्या बला है?
ये नारी
जो मिटती रहती
जो सहती रहती
अत्याचार, दुष्ट व्यवहार
जो देखी जाती है
कुदृष्टि से
जिसे रोका जाता है
स्वतंत्र घूमने से
जिसे डराता है हर पल
दुष्टों का भय
फिर भी सहम के
जीती है नारी
आखिर क्या है नारी?
नारी एक देवी है
गृहलक्ष्मी, दुर्गा, काली है
सरस्वती, विद्या दायिनी है
कन्या, बहन और
सबसे बढ़कर
एक माँ है नारी
ममता का सागर
जो मिटती है
अपने बच्चों पर
उन्हें बचाने के लिए
उन्हें राह दिखाने के लिए
और इसके लिए आगे भी
आहुति देती रहेगी नारी
हाँ, यही है नारी
यही है नारी।

● अवकेश कुमार

धर्म का राजनीतिकरण

कंचन

मुगलों के शासन काल के समय से जोर पकड़ने वाले जबरन धर्मान्तरण के इक्कीसवीं सदी में कारण बदल गए हैं। उस समय होने वाले धर्मान्तरण में हिंसा, प्रलोभन और सजा–ए–मौत जैसे हथियार अपनाए जाते थे किन्तु उस समय कई लोग जान पर खेल गए। सारे निजी लाभों को दरकिनार करते हुए अपने धर्म के प्रति वफादार रहे और कुछ लोग अपने जीवन व परिवार के अस्तित्व के लिए अपना अस्तित्व खोकर आगे बढ गए।

वर्तमान की तस्वीर अलग है। महज अपने धर्म के प्रचार–प्रसार और दूसरे धर्म के लोगों को नीचा दिखाने व अपने धर्म के लोगों की संख्या विशाल बनाने के लिए नए –नए प्रपंच रचे जाते हैं। जैसे हिन्दू व मुस्लिम लोगों को ईसाई बनाने के लिए करोड़ों रुपयों का अनुदान व लाखों की रिश्वत तथा बड़ी मात्रा में बाइबल छपवाकर अंधाधुंध लोगों में बांटना, वर्ण व्यवस्था से निजात पाने के लाभ गिनाना। इसी तरह से मुस्लिम धर्म के लोगों को अनेक प्रलोभन देकर घर वापसी का नाम देना, जो लोग अपने मुस्लिम धर्म में खुश हैं उनको उनके पूर्वजों के हिन्दू होने की दुहाई देकर घर वापसी कराना। इसी तरह हिन्दू सामुदायों में गरीब तबकों, निचली जातियों के लोगों को ऊंच–नीच का भेदभाव, वर्ण व्यवस्था से मुक्ति का आश्वासन दिलाना और आर्थिक मदद दे धर्म परिवर्तन कराना, यह सभी धर्म परिवर्तन के तरीके आम और सत्य हैं।

इसी के साथ इससे होने वाले सां. प्रदायिक तनाव और नफरत की आग इससे भी अधिक सत्य और असामान्य हो जाती है। यह असामान्यता, असंतोष व आक्रोश राजनैतिक दांव–पेचों का मुद्दा बनता है। सभी रा. जनीतिक पार्टियां अपने–अपने वोट बैंक को ध्यान में रखते हुए विवाद. स्पद बयानों की बौछार करने लगती हैं। उन्हें अच्छी खासी मीडिया कवरेज भी मिल जाती है और इसके बाद शुरु होता है राजनीतिक पार्टियों का एक–दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप का सिलसिला। निंदा करना। वेतुनियादी बयान देना और जब इससे मन नहीं भरता तो धरना, रोड जाम इत्यादि। उदाहरण के लिए हम देख सकते हैं कि गत दिसम्बर में आगरा में 200 मुस्लिम परिवारों ने एक साथ हिन्दू धर्म अपनाया। उनका कहना था कि उनके पुरखे हिन्दू थे और अब वह अपने धर्म में लौट रहे हैं। इसे आरएसएस और हिन्दू संगठनों ने घर वापसी का नाम दिया। फिर इस मुद्दे की कलई उतरने लगी।

हिन्दू संगठनों व भाजपा के नेताओं पर मुस्लिम परिवारों से जबरन धर्म परिवर्तन कराने एवं प्रलोभन में फंसाने का आरोप लगाया। बात यहीं नहीं थमी। कांग्रेसियों के हाथ मुद्दा लग गया और उन्होंने केंद्र सरकार को घेरना शुरू कर दिया। विपक्षी दल होने के नाते किसी भी समस्या या घटना पर केंद्र सरकार को घेरना कांग्रेस का कर्तव्य है।

किसी भी राजनेता या राजनीतिक पार्टी के लिए हर धर्म की समान महत्ता होनी चाहिए। जब जबरन हिन्दू धर्म के लोगों को मुस्लिम व ईसाई बनाया जाता है। करोडों रुपए खर्च कर लालच दिया जाता है तब क्यों किसी राजनीतिक पार्टी के कान खड़े नहीं होते? क्यों आपत्ति नहीं जताई जाती? टीवी न्यूज चैनलों में व अखबारों में स्थान नहीं दिया जाता। अपने मन से हम किसी भी धर्म का अनुसरण करें, कोई बुराई नहीं है क्योंकि हमारा देश स्वतंत्र है। हम आजाद हैं किन्तु किसी धर्म को ठेस पहुंचाना, लालच देकर किसी एक धर्म के लोगों की संख्या को बढावा देना गलत है। इसे खत्म करने के लिए धर्मान्तरण पर रोक का कानून लाया जाना चाहिए, जिससे कि किसी भी धर्म को निशाना बनाकर राजनीतिक तीर न चलाए जाएं।

दोस्ती अजीज है

शुभ्रा द्विवेदी

दुनिया में सबसे दिलचस्प लोगों का खिताब दोस्तों के पास है। क्यों? इसका जवाब तो खुद से पूछना ही वाजिब होगा। दोस्ती का रिश्ता हर मुसीबत का जवाब होता है। दोस्ती का साथ हर पल कुछ नया आजमाने की ख्वाहिश को पंख देता है।

हम सभी के पास कुछ नायाब दोस्त होते हैं। कोई भुलक्कड़ होता है। कोई भुक्खड़ तो कोई सुक्खड़ होता है। कोई फक्कड़ होता हैं। कोई गंभीर तो कोई मस्तमौला होता है। कोई जुगाड़ू पर समझदार होता है। कोई स्मार्ट तो कोई सीधा–साधा होता है। कोई सिर्फ हाथ मिलाता है तो कोई हाथ के आगे बढ़ जाता है। कोई किस्मत पर रोता है तो कोई बहुत हसरत पाले होता है। कोई अकेला तो कोई सोशल बटरफ्लाई होता है। कोई चुप रहता है तो कोई बड़ी–बड़ी हांकता है। कोई ख्वाबों में रहता है तो कोई आईना दिखाता है। कोई डरपोक तो कोई आजमाने का शौक रखता है। कोई वक्त लगाता है तो कोई हमेशा तैयार रहता

है। कोई कपड़े की दुकान तो कोई हुनर की खान होता है। किसी की हाजिर जवाबी बेमिसाल तो बस कोई कमाल होता है। यही सीढ़ियाँ जिंदगी को मजेदार बनाती हैं। गर दोस्ती निभाना आ जाए तो हर रिश्ते में जान आ जाती है।

जैसे–जैसे दोस्ती पुरानी होती है आपके प्रति हमारी एक जिम्मेदारी बढ़ जाती है। उसे समझने के लिए जरा गौर किया जाए तो उसके पीछे एक सच छुपा है। जब कोई कहे मजाक था यार एक दर्द छुपा है। अगर कोई कहे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता एक जरूरत छुपी है। जब कोई कहे मुझे अकेला छोड़ दो बातों का समंदर छुपा होता है। जब कोई मुस्कुरा दे पर खामोश रहे।

जरा सोचिए क्या खास है उस दोस्त में, जिससे आप अपनी व्यक्तिगत बात भी कह देते हैं। पर अपने ही माता–पिता से छुपते हैं। शायद यही सोचते होंगे कि वह दोस्त आपको समझेगा। हां, तब आप मन की बात माता–पिता को जरूर बताते, गर आपने उन्हें सबसे अच्छा दोस्त समझा होता। इसलिए यह दोस्ती का रिश्ता अनमोल है। अच्छे दोस्त सबको नहीं मिलते। एक अच्छी पुस्तक सी दोस्तों के बराबर होती है, पर एक अच्छा दोस्त पूरी लाइब्रेरी के बराबर होता है। अच्छे दोस्तों की तलाश मत करिए। खुद अच्छे बनिए। शायद आपसे मिलकर किसी की तलाश पूरी हो जाए। पर हां, सच्ची दोस्ती निभाएं और देखिए आपका कोई न कोई दोस्त इंतजार कर रहा है कि आप उसे समझेंगे।

मेरी उत्सुकता और बनारस की यात्रा

अनुराग आनंद

रात के ढाई बजे थे। मेरी ट्रेन मुगलसराय के प्लेटफार्म नम्बर तीन पर जा पहुंची थी। दो–दो बैगों के साथ मैं ट्रेन से ज्यों ही उतरा मेरी नजर एक हसीन युवती पर जा ठहरी, जो अपने दो भारी–भरकम बैगों के साथ उलझते हुए प्लेटफार्म से बाहर की ओर जा रही थी। संयोग की बात यह थी कि मुझे भी उसी रास्ते से बाहर निकलना था। यह रास्ता मैंने युवती को देखकर नहीं बल्कि अपने मकसद के हिसाब से चुना था। दिसम्बर का महीना था तो हल्की ठंड लगना जायज था। मैं बनारस जाने वाले ऑटो पर जाकर बैठ गया। मुझे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में अपने भैया के पास जाना था। अभी मैं ठीक से बैठ भी नहीं पाया था कि एक आवाज सी आई "एक्सक्यूज मी प्लीज"। आप हल्का सा साइड हटेंगे ताकि मैं भी बैठ पाऊं। मैंने जब उस ओर पलटकर देखा तो यह वही लड़की थी जो प्लेटफार्म पर उस वक्त मौजूद थी। मैंने उत्सुकता से सारे लोगों को हटाते हुए उसे जगह दी।

मेरी उत्सुकता की वजह वह नहीं थी जो आप सोच रहे हैं। उस युवती के जैकेट पर बीएचयू का लोगो लगा था, जिसे देखकर मैं उत्सुक था, क्योंकि उस रात अंजान शहर में मुझे मंजिल तक जाने का एक माध्यम सा मिल गया था। ऑटो चल चुका था, जिसके साथ ही ठंडी हवाओं से जिस्म कंपकंपा रहा था। खुले खेतों–नदियों के बीच कानपुर–लखनऊ जोड़ने वाले हाइवे पर ऑटो तो हवा से बातें कर रहा था। ठंड से शरीर ठिठुरा जा रहा था। चार लोगों की सीट पर पांच लोगों के बैठने के कारण ऊर्जा के सतत् संचार से पर्याप्त गर्मी मुझे मिल रही थी। अब बनारस करीब 15 मिनट दूर रह गया था। अतः अब और शांत बैठने से काम नहीं बनता। मैंने शांति में खलल डालते हुए बातचीत करने का निमंत्रण देने के अंदाज में पूछा, "मुझे बी.एच.यू. जाना है, क्या आप मदद करेंगी?" अपनी बड़ी–बड़ी आंखों से घूरते हुए वो मेरी तरफ मुड़ी। उसकी आंखों को देख नजर सीधी कर ली। "क्यों नहीं मुझे भी वहीं जाना है। तुम चाहो तो साथ चल सकते हो।" जवाब उम्मीद के अनुकूल पाकर मेरे मन में खुशी का लड्डू फूटा।

"आप वहीं पर पढ़ती हैं।" "हां, मैं आईआईटी बीएचयू से पढ़ाई कर रही हूं।" फिर अगला प्रश्न उसने पूछा, "और तुम?" उसकी लालसा को पूरा करते हुए मैंने अपना परिचय दिया और बताया कि यहां मैं सोशल साइंस के जियोग्राफी डिपार्टमेंट में अपने भैया के पास आया हूं। फिर बातों ही बातों में वाराणसी पहुंच गए हम। बातों का सिलसिला अब भी जारी था और हमारे कदम लंका गेट की ओर अग्रसर थे। मैंने उससे पूछा बीएचयू प्रशासन से सन्तुष्ट हैं? आप लोग छात्र राजनीति के समर्थन में हैं या नहीं?

अचानक से जवाब देते हुए वह बोली कि प्रशासन कुछ नहीं करता। पढ़ने वाले बच्चे होने चाहिए। लोगों की मानसिकता बदलनी चाहिए। बीएचयू आज जेएनयू से किसी स्तर पर कम नहीं है फिर भी यहां लडकियां देर शाम के बाद हॉस्टल से बाहर नहीं जा सकती हैं, जबकी जेएनयू में स्वतंत्र हैं। आज परिपक्व मानसिकता की जरूरत है। छात्र चुनाव यदि शांति के साथ और स्वच्छ हों तो पसंद है। बातों ही बातों में हम लंका गेट के सामने थे। यह गेट बीएचयू का प्रमुख दरवाजा है। इसके आसपास के क्षेत्र को लंका मार्केट के नाम से जाना जाता है

वरुणा–असि नदी के मध्य स्थित वाराणसी अध्यात्म का केंद्र है। आईआईटी, बीएचयू और बीएचयू मेडिकल की तकनीक एवं चिकित्सा के क्षेत्र में तरक्की आधुनिकता का प्रमाण है। अध्यात्म व सांस्कृतिक मूल्यों पर ही इसकी स्थापना हुई थी। यहां हर वह चीज है जो अन्य विश्वविद्यालयों में है। यहां लड़कियां घूमने निकलती हैं पर शाम होते ही कुछ इस तरह हॉस्टलों में कैद हो जाती हैं जैसे पक्षी पिजड़े में कैद हो जाते हैं। एक तरह से यह आश्चर्य ही है कि आजादी के बाद जिस बीएचयू ने शिक्षा व तकनीक के क्षेत्र में हजारों विभूतियां देश को देकर उसे मजबूत बनाया था। आज उसी बीएचयू में छात्र पत्थरबाजी करते नजर आ जाते हैं। पं. मदनमोहन मालवीय जी को भारत रत्न दिए जाने की खुशी में बीएचयू को दुल्हन की तरह सजाया गया था। पर, जरूरत है बीएचयू के छात्रों को रूढ़िवादिता से दूर होकर एक परिपक्व सोच को स्थापित करने की। हालांकि इस साल भी बीएचयू आईआईटी के विद्यार्थी को सर्वाधिक तीन करोड़ का सलाना पैकेज विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनी ने दिया, जिसे राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत होकर ठुकरा दिया गया।

अब वह वक्त आ गया है कि हम दोनों एक–दूसरे से विदा लें और अपने–अपने हॉस्टल की ओर चलें। मगर न चाहते हुए भी मुझे 'बाय' बोलना पड़ा। उसके जाते ही फिर से एक बार तेज ठंड में मेरा शरीर कांप गया, लेकिन उसकी बातों की गरमाहट साथ लिए मैं अपनी मंजिल तक पहुंच गया।

हिंदी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की गतिविधियां

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त 2014) के एक दिन पहले आयोजित समारोह में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी भाषा एवं पत्रकारिता की भूमिका पर एक समारोह का आयोजन किया गया। इसके जरिए वक्ताओं ने हिंदी, पत्रकारिता एवं जनसंचार के विद्यार्थियों को भारत के स्वतंत्रता संघर्ष और उसमें हिन्दी भाषा एवं पत्रकारिता की भूमिका के बारे में बताया गया। तत्पश्चात विद्यार्थियों ने सवाल–जबाव कर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान किया।

शिक्षक दिवस (5 सितम्बर 2014) पर आयोजित समारोह की अध्यक्षता इतिहास विभाग के शिक्षक डॉ. राकेश जी ने की। हिंदी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने इस समारोह के साथ एक नई परम्परा डाली, जिसमें विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के बारे में विस्तार से बात रखी। इस समारोह में विभाग के शिक्षकों में डॉ. सुभाष चन्द्र डबास, डॉ. संजय कुमार शर्मा, डॉ. अर्चना गौड़ आदि के साथ बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे।

24 सितम्बर 2014 को एक मीडिया संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें न्यू मीडिया, मोबाइल इंटरनेट, ऑनलाइन पत्रकारिता पर विस्तार के साथ बताया गया। वरिष्ठ पत्रकार भारत भूषण ने इस विषय पर व्याख्यान देते हुए न केवल विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन किया बल्कि विकल्पों की दिशा में बढ़ने के लिए उन्हें प्रोत्साहित भी किया। सोशल साइट्स के बारे में विद्यार्थियों ने सवाल जवाब भी किए। इस संगोष्ठी में विभागाध्यक्ष डॉ. सरोज गुप्ता, डॉ. अर्चना गौड़, डॉ संजय शर्मा आदि शिक्षक उपस्थित थे।

रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता : हिन्दी विभाग की ओर से 20 जनवरी 2015 को रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें अभिव्यक्ति की स्वतत्रंता, अस्मितामूलक संघर्ष, राष्ट्र निर्माण में विद्यार्थियों की भूमिका, लोकतंत्र और युवा शक्ति नामक विषय रखे गए। इस प्रतियोगिता में 43 छात्र–छात्राओं ने हिस्सा लिया, जिसमें परमानंद गोस्वामी ने प्रथम, शुभ्रा द्विवेदी ने द्वितीय और मीनाक्षी ने तृतीय स्थान हासिल किया।

विभाग की ओर से 17 सितम्बर 2014 को एक संगोष्ठी (पढ़ाई के लिए मानसिक शांति जरूरी) का आयोजन सेमिनार कक्ष में किया गया, जिसकी अध्यक्षता विभागाध्यक्ष डॉ. सरोज गुप्ता ने की। इस संगोष्ठी में वक्ताओं के रूप में योग गुरु वरुण वीर और टी.वी. पत्रकार मनीष ठाकुर ने हिस्सा लिया। इसका संचालन छात्र अनुराग आनंद व श्वेता नेगी ने किया। समारोह में अपना वक्तव्य देते हुए वरुण वीर ने कहा कि पढ़ाई के लिए मन का शांत होना जरूरी है। इसके लिए विद्यार्थी को हर रोज समय निकालकर योग ध्यान करना चाहिए। इसी तरह टी.वी. पत्रकार मनीष ठाकुर ने टी.वी. पत्रकारिता क्षेत्र की उपलब्धियों के साथ–साथ कमियों के बारे में विद्यार्थियों को बताया।

एक प्रशंसनीय पहल

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

पूजा शुक्ला

गत 22 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक साथ दो योजनाओं की शुरुआत की। इसमें एक योजना है–'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' और दूसरी योजना है–'सुकन्या सामृद्धि अकाउंट।' देश में बढ़ते लैंगिक असंतुलन को दूर करने की दिशा में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान बहुत प्रशंसनीय कार्य की शुरुआत है। इस कार्य को सफल बनाने के लिए हम सब को सामूहिक जिम्मेदारी उठानी होगी।

लैंगिक असंतुलन और भ्रूण हत्या एक सामाजिक बुराई के साथ–साथ मानसिक बीमारी भी है। अगर हम लैंगिक अनुपात को देखें तो एक हजार लड़कों के लिए देश में कुल नौ सौ दस लड़कियां हैं, जबकि दिल्ली से सटे हरियाणा में यह अनुपात और भी कम है। मौजूदा समय में राजधानी के पड़ोसी इस राज्य में एक हजार लड़कों पर आठ सौ सैंतीस लड़कियां ही हैं। यह किसी भी राज्य के लिए शर्मिंदगी की बात है। जहां एक तरफ कल्पना चावला जैसी अंतरिक्ष यात्री हरियाणा दे रहा है, वहीं राज्य में दूसरी कल्पना चावला को जन्म लेने से पहले ही मां के पेट में ही मार दिया जाता है।

कन्या भ्रूण हत्या के लिए जितने जिम्मेदार मां–बाप हैं उससे कहीं अधिक जिम्मेदार वह डॉक्टर हैं जो लैंगिक परीक्षण करने के बाद गर्भपात जैसा अपराध करते हैं। आज की जनता इतनी अधिक भ्रमित है कि एक तरफ वह बेटियों को मार रही है वहीं दूसरी ओर वह यह भी इच्छा रखती है कि उसके घर आने वाली उसकी बहू सुशिक्षित और कामकाजी हो। ऐसे लोग खुद को इक्कीसवीं सदी का नागरिक नहीं कह सकते हैं, क्योंकि इनकी मानसिक दशा आज भी अट्ठारहवीं सदी से मेल खाती है, जहां बेटियों को पैदा होते ही मार दिया जाता था।

अगर सर्व समाज इस बुराई का सामाजिक रूप से अवलोकन करे और लैंगिक असंतुलन के प्रमुख कारण कन्या भ्रूण हत्या को रोकने का संकल्प ले तो आने वाले समय में समूचे देश में लैंगिक अनुपात सही हो सकता है। साथ ही बेटे और बेटियों में भेदभाव मिट सकता है।

युवाओं की बदलती प्राथमिकताएं

प्रभात रंजन

भारत का समय बदला। परिस्थिति बदली और इसी तरह युवा पीढ़ी की प्राथमिकताएं बदली हैं। युवाओं में अंधी दौड़ मची है। खुद को स्तरीय दिखाने की चाह बढ़ी है। अपना रहन सहन फिल्मी नायक–नायिकाओं की तरह दिखाने में वह यह भी भूल जाते हैं कि उनका मूल उद्देश्य क्या है?

अपने इस प्रकार के जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए युवा अपराध करने से भी नहीं चूकते। इसके अंजाम के बारे में बिना सोचे–समझे अपना भविष्य खराब कर बैठते हैं। युवा पीढ़ी में कुछ एसे भी लोग हैं जो अपना विवेक खो चुके हैं और नशे के जाल में फंसकर अपनी पूरी जिंदगी मिटा देते हैं।

पिछले दिनों एक अखबार में समाचार प्रकाशित हुआ था कि एक युवा ने अपनी प्रेमिका को उपहार देने के लिए लूटपाट की वारदात को अंजाम दिया। अब यहां यह बात देखने वाली है कि युवा पढ़–लिखकर काबिल बनने के बजाय घटिया मार्गों को चुन लेता है, पर इस कहावत पर अमल नहीं करता कि जितनी चादर हो, उतने ही पैर फैलाने चाहिए।

वर्तमान समय में अंधी दौड़ में भागता युवा वर्ग फिल्मों से इतना प्रभावित है कि फिल्मों में दिखाई जाने वाली पश्चिमी सभ्यता को इस कदर अपना लेता है कि अपनी संस्कृति उसे अपने समय और भावनाओं की फिजूल लगने लगती है। चाहे विज्ञान भी हमारी संस्कृति को बेबुनियादी न बता पाया हो आज का युवा उसे उस दृष्टि से देखता है जिस प्रकार कोई विदेशी हीन भावना से भारतीय सभ्यता को देखता है। हमारी नृत्य कलाएं भरतनाट्यम, झूमर, कुचिपुडी, कथक किसी पश्चिमी नृत्य कला से कम हैं। इसी तरह हमारी भारतीय साड़ी, नेहरू कोट, किसी गाउन या केपरी से कम हैं। यह तो निजी पसंद है, पर अहम मुद्दा यह है कि केवल शोनैन बनने की चाहत में जीवन के सभी अहम पहलुओं को दरकिनार नहीं किया जा सकता। जरूरत इस बात की है कि पश्चिमी सभ्यता पूरी तरह अपनाने के बजाय युवा भारतीय सस्कृति बरकरार रखते हुए आधुनिकता से कदमताल करें।

दोनों देशों के सम्बन्धों को मिलेगी मजबूती

शिवानी तलवार

अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा तीन दिवसीय भारत यात्रा पर आए। ओबामा पहले ऐसे अमेरीकी राष्ट्रपति हैं जो गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि बनकर आए। भारत में उनका भव्य स्वागत किया गया।

भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व ओबामा के बीच अनेक मुद्दों पर बात हुई, जिसमें प्रतीक्षित असैन्य परमाणु करार समेत अनेक मसले शामिल हैं। दोनों नेताओं ने आतंकवाद को बड़ा खतरा बताते हुए कहा कि वह आतंकी पनाहगारों का सफाया करेंगे। ओबामा ने भारत को अपना सबसे अच्छा मित्र देश बताया। इस दौरे के बाद उम्मीद है कि दोनों देशों के बीच संबंध और अधिक मजबूत होंगे, जिससे भारत को आर्थिक विकास में सफलता मिलेगी।

नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी से मिले हिंदी, पत्रकारिता एवं जनसंचार के विद्यार्थी।

अधिकारों से क्यों वंचित हैं 'छोटू' और 'गुड़िया'

नेहा कौशिक

छोटू व गुड़िया दो ऐसे नाम हैं, जिन्हें सब जानते हैं, परंतु सब नजरअंदाज करते हैं। यह किसी फिल्म स्टार या राजनेता के बच्चे नहीं हैं न ही इन्हें शिक्षा व खेलकूद के क्षेत्र में प्रतिभाओं की वजह से ख्याति मिली है।

यह छह से बारह साल की उम्र में ही पढ़ाई, खेलकूद छोड़कर ढाबों, घरों और फैक्ट्रियों में काम कर देश को प्रगति की ओर ले जा रहे हैं। शायद इसीलिए सरकारें इनके काम में रुकावट नहीं बनना चाहती हैं। वह सोच कर उन्हें नहीं रोक पाती कि आज नहीं तो कल उन्हें अपने देश के लिए कुछ न कुछ तो करना है तो आज से ही क्यों नहीं। आज देश में लगभग 10.12 मिलियन छोटू और गुड़िया के रूप में बाल मजदूर हैं। विकास का यह काम करते–करते छोटू और गुड़िया कुपोषण का शिकार बन जाते हैं। फिर देश में लगभग 400 मिलियन से ज्यादा कुपोषित छोटू और गुड़िया मिलते हैं।

कई बार स्कूल जाते व खेलकूद करते बच्चों को देखकर इन छोटू और गुड़िया का मन भी यही करने को करता है। लेकिन इनके घर की आर्थिक स्थिति और गरीबी उनके मन की आवाज को दबा देता है। इसी वजह से भारत में बड़ी संख्या में छोटू व गुड़िया बिना पढ़े रह जाते हैं। सोचने की बात है कि जब हमारे देश के संविधान में सभी बच्चों को शिक्षा का और सुरक्षा का अधिकार है तो छोटू और गुड़िया इन अधिकारों से वंचित हैं तो आखिर क्यों?

नोटा से क्या होगा?

अंकित यादव

इतिहास में पहली बार 2013 में मतदाताओं को प्रत्याशियों को खारिज करने का अवसर मिला। देखना दिल. चस्प होगा कि नोटा का अधिकार क्या राजनीतिक दलों पर किसी तरह का नैतिक दबाव बना पायेगा, जिससे दागियों को टिकट न दिया जाए। जैसा कि चुनाव में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है कि कितने मतदाताओं ने इनमें से कोई नहीं यानि नोटा का बटन दबाया, की गिनती की जा सके।

मुद्दा यह भी है कि यदि ज्यादा से ज्यादा मतदाताओं ने नोटा का प्रयोग किया तो क्या होगा। कोई न कोई प्रत्याशी तो उस स्थिति में भी जीतेगा। कुछ मतदाता जाति, धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर बंटे होते हैं जिन्हें प्रत्याशी के दागी व ईमानदार होने से कोई फर्क नहीं पड़ता बल्कि वह तो अपना वोट जातिवाद पर ही कुर्बान कर देते हैं। इस स्थिति में नोटा का चुनाव करने वाले वोटरों की संख्या का भी अंदाजा नहीं लगाया जा सकता।

यहां तक कि उच्च न्यायालय ने संसद का उदाहरण देते हुए कहा था कि वहां भी वोटिंग की स्थिति अनुपस्थित की संख्या में बताई जाती है लेकिन चुनाव आयोग में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जिससे नोटा वोटरों की गिनती की जा सके और नोटा का फायदा साफ छवि वाले नेता पा सकें।

नेताओं की चुपी

आयुशी गौड़

क्या हाल है बहन जी? ठीक है। अरे! ठीक तो हैं, पर आम आदमी को वोट मत देना। चोर है वो आदमी। यह मैं नहीं कह रही हूं। पढ़ने में जितना अजीब यह आपको लग रहा है उससे कहीं ज्यादा अजीब मुझे लगा जब बस में अपने बगल की सीट पर बैठी उस वृद्ध महिला को मैंने यह कहते सुना। भला यह कैसा जवाब हुआ? जब कोई आपसे हाल पूछता है तो आपका जवाब अक्सर यह होता है कि हां मैं ठीक हूं। आप बताइए या पूछने वाला अगर आपका ज्यादा प्रिय हुआ तो आप दो–चार बातें और जोड़ देते होंगे। लेकिन खैरियत जानने के लिए पूछे गए प्रश्न के जवाब में यह कहना कि आम आदमी को वोट मत देना, यह सच में असमंजस की स्थिति पैदा कर देता है।

दरअसल उस महिला से मेरा कोई ताल्लुक नहीं था। लेकिन उनकी कही इस बात ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि आखिर उनके इस वाक्य के पीछे उनकी क्या मनःस्थिति रही होगी? उस महिला को ध्यान से देखने पर उनके वाक्य का भाव आसानी से स्पष्ट हो रहा था। उनकी आंखों में क्रोध था न केवल क्रोध था बल्कि घोर निराशा भी थी। मानो केजरीवाल के सरकार छोड़कर जाने से उस महिला को किसी तरह की प्रताड़ना से गुजरना पड़ा हो। बात साफ थी कि वह महिला आम आदमी पार्टी की ही सदस्य रही होगी। चुनाव के समय अपनी पार्टी की जीत के लिए उस महिला ने हर संभव प्रयास किए होंगे। केजरीवाल के 49 दिनों में अचानक इस्तीफा देने से उसे अपनी मेहनत बेकार नजर आने लगी होगी, क्योंकि इस्तीफा देने के बाद जो आलोचना केजरीवाल को मिली उसे उन्होंने अकेले नहीं भोगा। कहीं न कहीं पार्टी से जुड़े हर व्यक्ति को भोगना पड़ा। बस की सीट पर बैठी उस महिला की बात से साफ जाहिर था कि केजरीवाल के इस फैसले ने उनकी मेहनत को कितना व्यर्थ किया।

खैर यहाँ मेरा कहना यह नहीं है कि केजरीवाल ने सरकार क्यों छोड़ी और न ही मैं किसी पार्टी विशेष के पक्ष या विपक्ष में बोल रही हूं। मेरा तो केवल इतना कहना है कि चुनाव प्रचार, चुनावी जीत, सरकार बनाना और राजनीति करना यह सब बड़े–बड़े नेताओं के लिए भले ही अब शौक बनकर रह गया है, लेकिन आज भी एक आम नागरिक के लिए चुनाव आम नहीं हैं। किसी पार्टी की जीत से फायदा बड़े चेहरों को ही होता है। लेकिन पार्टी की हार से हर वो शख्स प्रभावित होता है जो कहीं न कहीं पार्टी से सम्बंधित है।

यहां मेरा प्रश्न यह है कि अपने भाषणों में बड़ी–बड़ी बातें कहकर रातों–रात नेता हीरो तो बन जाते हैं लेकिन जब इन्हीं की वजह से आम आदमी मायूस होता है और प्रश्न उठाता है तो सारे नेता चुप क्यों हो जाते हैं? आखिर क्यों जनता अपनी ही चुनी सरकार पर भरोसा खो देती है?

दिल्ली के रखवाले ही नहीं हैं महफूज

सोनू पचौरी

देश की राजधानी दिल्ली अब क्राइम कैपिटल बन चुकी है। हत्या, रेप, चोरी और लूट जैसे आपराधिक मामले घटने के बजाय दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। दिल्ली पुलिस से उम्मीद की जाती है कि वह अपनी जिम्मदारियों का निर्वहन और अच्छी तरह से करे परंतु स्थिति पहले से कहीं अधिक भयावह बन चुकी है।

अपराधियों के निशाने पर अब सिर्फ आम लोग ही नहीं रहे बल्कि दिल्ली के रखवाले यानि दिल्ली पुलिस के सिपाही ही उनके निशाने पर आ गए हैं। पिछले कुछ वर्षों में दिल वालों की दिल्ली की सुरक्षा करने वाले दिल्ली पुलिस के जवानों पर बदमाशों द्वारा लगातार हमले किए जा रहे हैं। यह गंभीर प्रवृत्ति है कि अपराधी कितने निर्भय और बेफिक्र हो गए हैं जो मनचाहे ढंग से घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं।

दिल्ली में कहीं सिपाहियों के साथ मारपीट की जा रही है तो कहीं उन पर गोलीबारी की जा रही है। स्थिति इतनी भयावह हो गई है कि शहरवासी अपने को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। यहां एक बड़ा सवाल यह भी उठता है कि जब पुलिस वाले ही सुरक्षित नहीं होंगे तो भला आम आदमी की सुरक्षा कौन करेगा?

दिल्ली पुलिस का कुछ हद तक आधुनिकीकरण तो हुआ है परंतु फिर भी सभी पुलिसकर्मियों के पास हथियार उपलब्ध नहीं हैं, जिसका फायदा अपराधी उठाते हैं। हाथ में लाठी लिए हुए पुलिसकर्मी बंदूक का सामना नहीं कर सकते हैं। एक अन्य पहलू यह भी है कि जवानों को जिस तरह के आधुनिक प्रशिक्षण की आवश्यकता है वैसा प्रशिक्षण उन्हें नहीं दिया जा रहा है। जाहिरा तौर पर प्रशिक्षण और हथियार की कमी पुलिसकर्मियों के साथ हादसे की बड़ी वजह बन रही है, परंतु पुलिस कमिश्नर बी.एस. बस्सी हमेशा इस बात को नकारते रहे हैं।

2014 में पुलिसकर्मियों पर हुए हमले

14 जून 2014 : *मोती नगर थाना क्षेत्र में ट्रैफिक पुलिस के सिपाही मन्ना राम को बदमाशों ने कार से कुचला।*

14 जुलाई 2014 : *जाफराबाद में सिपाही शिवराज तोमर की बदमाशों ने गोली मारकर हत्या कर दी।*

27 सितंबर 2014 : *जाफराबाद में सिपाही धरमपाल पर जानलेवा हमला।*

भगवान भरोसे महिलाओं की सुरक्षा

अनित कुमार

समाज में महिलाओं की सुरक्षा एक गंभीर मुद्दा है। दिल्ली जो भारत की राजधानी है वह भी महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों की भी राजधानी है। दिल्ली में आए दिन बलात्कार के मामले सामने आते हैं। कहा जाता है कि दिल्ली दिल वालों की है, लेकिन महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराधों से लगता है कि दिल्ली वालों के पास दिल ही नहीं है। दिल्ली देश की राजधानी है और देश का गौरव और सम्मान है, लेकिन दिल्ली में महिलाओं की सुरक्षा को देखा जाए तो क्या गौरव और सम्मान जब महिलाएं अपने आपको असुरक्षित महसूस करती हैं तो दूसरे राज्यों व ग्रामीण क्षेत्रों के बारे में आप सहज अंदाजा लगा सकते हैं कि वहां क्या हालात होंगे।

महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध दिल्ली ही नहीं पूरे देश में एक गंभीर समस्या हैं। बलात्कार, छेडखानी,

कन्या भ्रूण हत्या, दहेज के मामले दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। 16 दिसम्बर 2012 को दिल्ली गैंगरेप ने दिल्ली के लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया था कि दिल्ली में महिलाएं असुरक्षित हैं। लोगों ने एक होकर पुलिस प्रशासन और सरकार के खिलाफ आवाज बुलन्द की तो एकबारगी जनसैलाव उमड़ पड़ा। सरकार ने दबाव में एक त्वरित न्यायालय का गठन किया। साथ ही दिल्लीवासियों को भरोसा दिलाया कि सुरक्षा के लिए पुख्ता इंतजाम किए जाएंगे। लेकिन कुछ महीनों बाद वह सब वादे खोखले नजर आए। गत 15 अप्रैल को गांधीनगर में दो लोगों ने पांच साल की बच्ची के साथ बलात्कार किया और बंद कमरे में मरने के लिए छोड़ दिया। हाल में हुआ उबेर कैब रैप केस आदि घटनाओं ने लोगों को एक बार फिर चिंतित कर दिया।

सरकार भी घटना घटने के बाद हरकत में आती है। पहले अगर महिला सुरक्षा को लेकर विचार क्या जाए तो क्या इन घटनाओं को रोका नहीं जा सकता है। महिलाओं की सुरक्षा के लिए ढेर सारे कानून हैं और अब तो त्वरित न्यायालय भी बना दिया गया है। फिर भी महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध कम नहीं हो रहे हैं। महिलाओं की सुरक्षा के लिए पुलिस प्रशासन को कड़े कदम उठाने की जरूरत है वहीं समाज को भी जागरूक होने की आवश्यकता है।

पर्यावरण को सबसे अधिक मनुष्य ने नुकसान पहुंचाया

उदय चन्द शर्मा

पर्यावरण शब्द का संधि विच्छेद करें तो यह दो शब्द परिआवरण से मिलकर बना है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है चारों ओर से ढका हुआ। इस संसार में जितनी भी चीजें हैं उस एकल चीज के लिए बाकी बची सारी चीजें उसका पर्यावरण कहलाएंगी।

इस प्रकार हमारे पर्यावरण के तत्व में वायु, पृथ्वी, आकाश, जंतु, पादप, सूर्य व अन्य शामिल हैं। जीव का विकास उसका पर्यावरण निर्धारित करता है। पर्यावरण से ही हरेक जीव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मनुष्य सब जीवों में बुद्धिशाली है। इस मानव ने पर्यावरण का खूब दोहन किया है। वर्तमान में हमारा पर्यावरण असंतुलित हो चुका है। आज हमारा वायु मंडल प्रदूषित है। जल दूषित हो चुका है। मिट्टी की उपजाऊ शक्ति खत्म हो चली है। मौसम में निरंतर बदलाव हो रहा है। जीव जंतुओं की संख्याओं में कमी आ रही है। इससे पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंच रहा है। मनुष्य को यह बात अच्छे से समझ लेनी चाहिए कि धरती पर हर एक-दूसरे पर निर्भर करता है। यह सच है कि बिगड़े पारिस्थितिकी तंत्र का सबसे अधिक असर मानव ही महसूस कर रहा है और भुगत भी रहा है। लेकिन फिर भी मानव ही सबसे अधिक भक्षण में लगा हुआ है।

मानव को समझना चाहिए कि बुद्धि होने से इसका दायित्व और बढ़ जाता है। मानव को पर्यावरण रक्षक बनकर इसका सही और उचित इस्तेमाल करना चाहिए। हमारे वातावरण में जरूरत है कि बच्चे को प्रारंभ से ही पर्यावरण चैतन्य बनाया जाना चाहिए। दो पंक्तियां इसके लिए बड़ी सटीक बैठती हैं-'बिन पर्यावरण सब जग सूना, फिर क्यों कर रहे हो इसका दोहन दूना।'

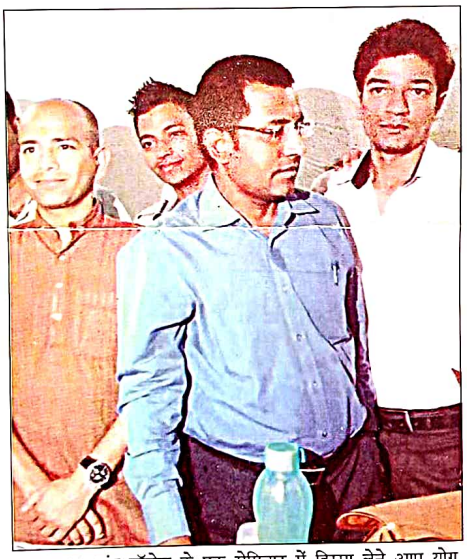

रामलाल आनंद कॉलेज के एक सेमिनार में हिस्सा लेने आए योग गुरु डॉ. वरुण वीर व पत्रकार मनीष ठाकुर।

स्वच्छ भारत मिशन को सहयोग की आवश्यकता

अवकेश कुमार

देश को साफ-सुथरा और गंदगी मुक्त बनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान का शुभारंभ गत दो अक्टूबर को गांधी जयंती पर किया। अभियान के तहत मंत्रियों व मुख्यमंत्रियों ने अलग-अलग शहरों में देश को स्वच्छ रखने का संदेश दिया। साथ ही सहयोग प्रदान करने के लिए आम जनमानस को प्रेरित किया।

स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरुक करने के लिए इससे पहले 26 सितंबर से 23 अक्टूबर तक समूचे देश में अभियान चलाया गया। वैसे इसकी घोषणा प्रधानमंत्री मोदी ने 15 अगस्त 2014 को लालकिले की प्राचीर से राष्ट्र के नाम अपने सम्बोधन में की थी। उन्होंने गांधी जयंती के अवसर पर इसकी शुरुआत करते हुए कहा कि हम सब देशवासी मिलकर गांधी जी की 150वीं जयंती यानि दो अक्तूबर 2019 को स्वच्छ भारत के रूप में प्रस्तुत करेंगे। यही गांधी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस मिशन ने शुरुआत में खूब वाहवाही बटोरी। कुछ एक स्थानों पर जागरूक कैंप लगाए गए तो कुछ स्थानों पर आला हस्तियों ने भी अभियान में हिस्सा लिया।

प्रधानमंत्री ने आंदोलन को सफल बनाने के लिए सचिन तेंदुलकर, प्रियंका चोपड़ा, सलमान खान, कमल हासन, बाबा रामदेव, अनिल अंबानी, मृदुला सिंह, सहित नौ हस्तियों को आमंत्रित किया। इन हस्तियों से यह अपेक्षा की कि वे नौ अन्य लोगों को निमंत्रित करें। इसी तरह स्वच्छता से प्रतिबद्ध लोगों की एक लंबी कतार बन जाएगी। अभियान ने शुरुआती समय में लोगों पर खूब प्रभाव डाला परंतु समय बीतने के साथ इसकी भी पकड़ ढीली हो गई।

क्रिकेट विश्वकप में 14 टीमों के बीच होगी जंग

मनीष

क्रिकेट विश्वकप की उलटी गिनती शुरु होने वाली है। कुछ ही दिनों में क्रिकेट विश्वकप का महाकुंभ शुरू हो जायेगा। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने इस विश्वकप की मेजबानी आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड को दी है। क्रिकेट विश्वकप की शुरुआत 14 फरवरी को क्राइस्ट चर्च में न्यूजीलैंड बनाम श्रीलंका के मैच से होगी। वहीं फाइनल मैच मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में 29 मार्च को खेला जायेगा।

इस बार विश्वकप में कुल 44 मैच खेले जायेंगे, जिसमें 26 मैच आस्ट्रेलिया और 23 मैच न्यूजीलैंड में आयोजित होंगे। क्रिकेट का यह महाकुंभ 49 दिनों तक चलेगा। इसमें हिस्सा लेने वाली 14 टीमों को दो ग्रुप में रखा गया है। ग्रुप ए में इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया, श्रीलंका, बांग्लादेश, न्यूजीलैंड, अफगानिस्तान व स्कॉटलैंड की टीमों को जगह मिली है तो ग्रुप बी में भारत, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका, वेस्टइंडीज, जिम्बाब्वे, आयरलैंड व यूएई की टीमों को स्थान मिला है।

विश्वकप 2011 की विजेता टीम यानि भारत इस बार अपना पहला मैच 15 फरवरी को अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान से ऐडिलैंड के एडिलेड ओवल मैदान में खेलेगा। यह मुकाबला विश्वकप

के चुनिंदा मुकाबलों में से एक होने की सम्भावना है। दरअसल विश्वकप में भारत अभी तक पाकिस्तान से नहीं हारा है। विश्वकप 2011 में भी भारत ने पाकिस्तान को सेमीफाइनल मुकाबले में हराकर महाकुंभ से बाहर कर दिया था। यह मैच मोहाली में खेला गया था।

नाकआउट चरण : विश्वकप में पूल के मैच 14 फरवरी से 15 मार्च तक होंगे। फिर 18 मार्च से 21 मार्च तक क्वार्टर फाइनल के मुकाबले होंगे। विश्वकप का पहला सेमीफइनल 24 मार्च और दूसरा सेमीफाइनल 26 मार्च को होगा। फाइनल मैच 29 मार्च को मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में होगा।

विश्वकप 2015 में कुछ नया : इस बार क्रिकेट विश्वकप में कुछ नया और खास करने की कोशिश की गई है। इसी के तहत आईसीसी ने फैसला किया है कि अगर विश्वकप का फाइनल मैच टाई पर खत्म होता है तो विजेता का फैसला सुपर ओवर से किया जायेगा।

आरएलए समाचार
संरक्षक
डॉ. विजय कुमार शर्मा, *प्राचार्य*
डॉ. सरोज गुप्ता, *अध्यक्ष*
हिंदी, पत्रकारिता एवं जनसंचार
परामर्शदाता
डॉ. संजय कुमार शर्मा
डॉ. अर्चना गौड़
मार्गदर्शक
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
सोनू पचौरी
सहायक संपादक
रितु श्रीवास्तव, शुभ्रा द्विवेदी
उप-संपादक
संजीव कुमार, नेहा कौशिक, पूजा शुक्ला
संपादक मंडल
कंचन, आशीष कपूर, शिवानी
विशेष सहयोग
शुजाउद्दीन